शीर्ष रचनाकार के जीवन व कृतित्व पर विनिबंध

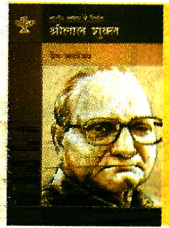

साहित्य अकादेमी ने अपनी यशस्वी भारतीय साहित्य के निर्माता शृंखला के माध्यम से हिंदी की बड़ी सेवा की है। इतने कम मूल्य पर सुरुचिपूर्ण मोनोग्राफ़ प्रकाशित करना वर्तमान व्यावसायिकता से भरे कालखंड में स्तुत्य ही कहलाएगा।

भारतीय साहित्य के निर्माता शृंखला की नई कड़ी में श्रीलाल शुक्ल के जीवन और कृतित्व पर 104 पन्नों का यह मोनोग्राफ़ (विनिबंध) प्रेम जनमेजय के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। हिंदी व्यंग्य साहित्य को अपनी रचनात्मकता से सार्थक दिशा देने वालों में श्रीलाल शुक्ल का नाम प्रमुख है। उनकी कृति राग दरबारी हिंदी की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकों में शुमार है। उनके चार कहानी-संग्रह, नौ व्यंग्य-संग्रह और दस उपन्यास प्रकाशित हुए हैं और उन्होंने साहित्य अकादेमी के लिए मोनोग्राफ़ भी लिखे हैं। इतने व्यापक और महत्वपूर्ण रचनाकर्म वाले लेखक के जीवन पर इस विनिबंध का प्रकाशन हिंदी के पाठकों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों के लिए एक आवश्यक पहल है। पुस्तिका छह खंडों में विभक्त है, जिनमें एक-एक कर शुक्ल जी की जीवन-यात्रा और रचनाकर्म पर संक्षिप्त में चर्चा की गई है। उपसंहार और दो परिशिष्टों का भी समावेश किया गया है। एक पूरा अध्याय राग दरबारी और उसके रचना-समय को समर्पित है। पुस्तक की छपाई, कलेवर और प्रस्तुतिकरण सुरुचपूर्ण है और मात्र पचास रुपयों में इसे हिंदीप्रेमियों के लिए एक उपहार ही कहा जा सकता है। शुक्ल जी के प्रशंसकों के लिए तो यह एक अनिवार्य कृति है।

श्रीलाल शुक्ल / प्रेम जनमेजय
50 ₹ / साहित्य अकादेमी